5

महत्वपूर्ण चिह्न और चकित करने वाले संकेत

पिछले पाठ में हमने माना था कि लोग प्रकाशितवाक्य के संकेतों से डर जाते हैं। पुस्तक के आरंभिक शब्दों को यदि ध्यान से सुनें तो हमें इसके रूपों से चकित होने की आवश्यकता नहीं, ''यीशु मसीह का प्रकाशितवाक्य जो उसे परमेश्वर ने दिया, ... और उसने अपने स्वर्गदूत को भेजकर उसके द्वारा अपने दास यूहन्ना को बताया (1:1; KJV)। पहली बात, ''प्रकाशितवाक्य'' शब्द *apokalupsis* से अनुवाद किया गया है और अपोकलिप्टिक साहित्य में संकेतों की भरमार है। KJV में ''बताया'' की जगह ''signified'' है, जो संकेत देता है कि अन्दर क्या है।[1] अंग्रेज़ी शब्द ''सिगनीफाइड'' का अनुवाद ''sign'' से किया गया है, जिसका मूल अर्थ ''चिह्न के द्वारा संकेत करना'' है।[2] डब्ल्यू. ई. वाइन ने लिखा है कि प्रकाशितवाक्य 1:1 में इस शब्द का इस्तेमाल किया गया था, ''जहां सुझाव शायद चिह्नों के द्वारा बात कहने का है।''[3] इस स भावना पर बल देने के लिए प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का परिचय देते हुए बाइबल शिक्षक आमतौर पर बोर्ड पर ''सिगनीफाइड'' शब्द को ''SIGN-ified'' लिखते हैं।

हमारी समस्या यह है कि ये चिह्न और संकेत पहली शताब्दी के पाठकों के लिए तो जाने-पहचाने थे, परन्तु हमारे लिए नहीं। पहले आए पाठ का और इस पाठ का उद्देश्य हमें संकेतों की भाषा समझने में सहायता करना है। पिछले पाठ में हमने सामान्य रूप में संकेतों पर चर्चा की थी और उनकी व्या या के लिए कुछ सुझाव दिए थे। हमने यह भी देखा था कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में संकेतों की चार मु य किस्में हैं। इनमें से पहली हम देख चुके हैं: सांकेतिक रूप में अंकों का इस्तेमाल। इस पाठ में हम संकेतों की अन्य तीन किस्मों की समीक्षा करेंगे।

पुराने नियम से संकेत

प्रकाशितवाक्य में पुराने नियम के चार सौ से अधिक हवाले हैं।[4] इनमें से अधिकतर हवाले पुराने नियम के पात्रों या घटनाओं के हैं। आरंभिक मसीही पुराने नियम से परिचित थे, पात्र या घटना के उल्लेख मात्र से ही उनके दिमाग में सारी बात आ जाती थी, जिससे प्रकाशितवाक्य के इसके इस्तेमाल के महत्व को समझना आसान था। कालक्रम के अनुसार इन हवालों की आंशिक सूची आगे दी गई है। यदि आप इन कहानियों से परिचित हैं तो

प्रकाशितवाक्य का अध्ययन करने में यह सूची आपके लिए काफ़ी सहायक होगी।

सृष्टि और गिरना

पहला आकाश और पृथ्वी (उत्पत्ति 1:1; प्रकाशितवाक्य 21:1)
अदन/स्वर्गलोक (उत्पत्ति 2:8; 3:23; प्रकाशितवाक्य 2:7)
जीवन का वृक्ष (उत्पत्ति 2:9; 3:22-24; प्रकाशितवाक्य 2:7; 22:2)
मसीहा की पहली प्रतिज्ञा (उत्पत्ति 3:15; प्रकाशितवाक्य 12:7-11)

पुरखे (उत्पत्ति 10:1; 12:1; प्रकाशितवाक्य 4:4)

धनक (उत्पत्ति 9:11-17; प्रकाशितवाक्य 4:3; 10:1)
सदोम (उत्पत्ति 18:16-33; 19:1-29; प्रकाशितवाक्य 11:8)
बारह गोत्र (उत्पत्ति 35:22-26; प्रकाशितवाक्य 7:4-8; 21:12)
यहूदा को प्रतिज्ञा (उत्पत्ति 49:10; प्रकाशितवाक्य 5:5)
यहूदा को सिंह के रूप में दिखाया गया (उत्पत्ति 49:9)

मूसा और निर्गमन

मिस्र (निर्गमन 1:1, 13, 14; प्रकाशितवाक्य 11:8)
दस विपत्तियां (निर्गमन 7:14-25; 8:1-32; 9:1-35; 10:1-29; 11:1-10; 12:1-32; प्रकाशितवाक्य 8:7-13; 9:1-21; 11:6; 15:1-8; 16:1-21; 22:18)
फसह का मेमना (निर्गमन 12:21-27; प्रकाशितवाक्य 5:6)
विजय का मूसा का गीत (निर्गमन 15:1-19; प्रकाशितवाक्य 15:3, 4)
जंगल (निर्गमन 16:1; प्रकाशितवाक्य 12:6, 14)
परमेश्वर की ओर से मन्ना (निर्गमन 16:31, 35; प्रकाशितवाक्य 2:17)
सीनै पर्वत (भूक प, गरज, चमक; निर्गमन 19:16-20; प्रकाशितवाक्य 4:5)
त बू (मन्दिर के हवाले भी देखें) (निर्गमन 25:9; प्रकाशितवाक्य 21:3)
वाचा का संदूक (निर्गमन 25:10; गिनती 10:33; प्रकाशितवाक्य 11:19)
दीवट (निर्गमन 25:31; प्रकाशितवाक्य 1:12, 20; 2:1; 4:5)
वेदी (निर्गमन 27:1; प्रकाशितवाक्य 6:9; 8:5)
धूप (निर्गमन 30:1; प्रकाशितवाक्य 5:8; 8:3, 4)
जीवन की पुस्तक (निर्गमन 32:33; भजन संहिता 69:28 भी देखें; मलाकी 3:16; प्रकाशितवाक्य 3:5; 20:12, 15; 21:27)
बिलाम (गिनती 22:5; 2 पतरस 2:15 भी देखें; प्रकाशितवाक्य 2:14)

न्यायी

मगिद्दो की तराई (न्यायियों 5:19; 2 इतिहास 35:22-24; प्रकाशितवाक्य 16:16)

दाऊद और संघीय राज्य

यरूशलेम चुना गया (2 शमूएल 5:5-9; प्रकाशितवाक्य 3:12; 21:2, 10)

मसीहा का दाऊद के द्वारा आना (2 शमूएल 7:8-17; प्रकाशितवाक्य 5:5; 22:16)
मन्दिर (मन्दिर के हवाले भी देखें; 1 राजा 6:1-38; प्रकाशितवाक्य 3:12; 11:19; 15:5, 8; 16:1)
मन्दिर की आराधना में वीणाएं (1 राजा 10:12; 1 इतिहास 25:6; प्रकाशितवाक्य 5:8; 14:2; 15:2)

भविष्यवक्ता और विभाजित राज्य

एलिय्याह (1 राजा 17:1; याकूब 5:17, 18 भी देखें; प्रकाशितवाक्य 11:6)।
इज़ेबेल (1 राजा 16:31; प्रकाशितवाक्य 2:20)

घटनाओं और पात्रों के हवालों द्वारा प्रकाशितवाक्य में पुराने नियम के कुछ और हवाले हैं, जिनमें पुराने नियम के *अपोकलिप्टिक* भागों से संकेत लिए गए हैं। नीचे इनमें से लिए गए कुछ हवालों की सूची दी गई है, जिसे कालक्रम के अनुसार भी दिया गया है। (इन हवालों में आपको पिछले पाठ के आर भ में दिए गए कुछ अजीब जीवों के बारे में भी जानकारी मिलेगी।) यदि आपको मूल हवाले की पूरी समझ नहीं भी है तौ भी प्रकाशितवाक्य के शब्दों से पुराने नियम के शब्दों की तुलना करने में यह आपके लिए सहायक होगी।

भविष्यवक्ता और विभाजित राज्य

यशायाह
चार ज़िंदा जीव (यशायाह 6:1-7; यहेजकेल 1:4-25 भी देखें; 10:1-22; प्रकाशितवाक्य 4:6-9)
बाबुल का गिरना (यशायाह 13:1-22; पुराने नियम के अन्य भविष्यवक्ता भी देखें; प्रकाशितवाक्य 16:19; 17:5; 18:2)
दाऊद की कुंजी (यशायाह 22:22; प्रकाशितवाक्य 3:7)
हौद (यशायाह 63:3; प्रकाशितवाक्य 14:14-20)
नया आकाश और नई पृथ्वी (यशायाह 65:17-25; 66:22-24; प्रकाशितवाक्य 21:1-27; 22:1-5)

योएल
टिड्डियां (योएल 2:1-27; प्रकाशितवाक्य 9:3-10)

भविष्यवक्ता और दासता

यहेजकेल
मसीहा और परमेश्वर के विवरण (यहेजकेल 1:4, 26-28; 43:2; प्रकाशितवाक्य 1:12-16; 4:2, 3, 5)
पुस्तक खाना (यहेजकेल 2:7-10; 3:1-4; प्रकाशितवाक्य 10:8-11)
गोग और मगोग (यहेजकेल 38:2; 39:1, 6; उत्पत्ति 10:2 भी देखें;

प्रकाशितवाक्य 20:8)

पक्षियों को निमन्त्रण (यहेजकेल 39:17-20; प्रकाशितवाक्य 19:17, 18)
दोनों किनारों पर वृक्षों वाली जीवन के जल की नदी (यहेजकेल 47:1-12; प्रकाशितवाक्य 22:1-3)
अद्‌भुत नगर (यहेजकेल 48:30-35; प्रकाशितवाक्य 21:12, 13, 16)

दानिय्येल
मसीहा और परमेश्वर के विवरण (दानिय्येल 7:1-10, 13, 14; 10:5, 6; प्रकाशितवाक्य 1:12-16; 4:2, 3, 5)
पशु (दानिय्येल 7:1-8; प्रकाशितवाक्य 13:1, 2)
पुस्तकों का खोला जाना (दानिय्येल 7:10; प्रकाशितवाक्य 20:11-15)

भविष्यवक्ता और दासता से लौटना

जकर्याह
नापने की डोरी (जकर्याह 2:1-5; यहेजकेल 40:3 भी देखें; प्रकाशितवाक्य 11:1, 2; 21:15)।
दो गवाह- जैतून के वृक्ष और दीवट (जकर्याह 4:1-14; प्रकाशितवाक्य 11:3, 4)

पुराने नियम के हवालों की तुलना उनसे मेल खाते प्रकाशितवाक्य के हवालों से करते हुए ''घुमाव'' को देखें। प्रकाशितवाक्य के हवाले की एक या अधिक बातें आमतौर पर मेल खाते पुराने नियम के हवाले से अलग होंगी। इससे आपको पता चल जाएगा कि प्रकाशितवाक्य संक्षेप में पुराने नियम में कही गई बात को ही नहीं कह रहा, बल्कि वैसी ही या उससे जुड़ी अवधारणा को बता रहा है। उदाहरण के लिए प्रकाशितवाक्य 7:4-8 में बारह गोत्रों की एक सूची है। यदि आप घुमाव को नहीं समझ पाते तो आप यह मान लेंगे कि यह मूल यहूदियों की ही बात है, परन्तु इस सूची की तुलना पुराने नियम की सूचियों (उत्पत्ति 35:22-26 जैसी) से करने पर आप देखेंगे कि यह सूची गलत है: यानी बारह में लेवी का नाम दिया गया है, दान का नहीं है और ऐसी कई गलतियां हैं। इसलिए आपको तुरन्त पता चल जाता है कि यूहन्ना सांसारिक इस्राएल की बात *नहीं* कर रहा था।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित संकेत

प्रकाशितवाक्य के अध्ययन के लिए उन नगरों की विशेषताओं का जिन में आसिया की सात कलीसियाएं थीं, पता होना, कलीसिया में घुस आने वाली शिक्षा से जुड़ी गलतियों की समझ और उन देशों के बारे में कुछ जानकारी होना आवश्यक है, जो रोमी साम्राज्य का भाग नहीं थे, (जैसे पारथ) वचन का अध्ययन करते हुए हम इसके अधिकतर भाग पर चर्चा कर

सकते हैं। विशेष महत्व *रोमी साम्राज्य* और मसीहियत के साथ इसके स बन्ध की पृष्ठभूमि की जानकारी का है। रोमी साम्राज्य का नि न सर्वेक्षण सहायक हो सकता है।

आर भिक इतिहास

बाइबल से बाहर की पर परा के अनुसार, रोमुलुस और रेमुस ने 753 ई.पू. में रोम बसाया। नगर सात पहाड़ियों पर बना था। 509 ई.पू. में रोमियों ने एक दमनकारी राजा को निकालकर गणराज्य की स्थापना कर दी।

जूलियस सीज़र (49-44 ई. पू.)

जूलियस कैसर या सीज़र की शुरुआत एक राजनीतिज्ञ के रूप में हुई, परन्तु वह एक सैनिक बन गया। 49 ई.पू. में उसने सैनिक बल से रोमी सीनेट पर कब्जा करके अपने आप को तानाशाह घोषित करते हुए जूलियो-क्लाउडियन राजवंश की स्थापना कर दी।[5] रोमी साम्राज्य आर भ करने का श्रेय उसी को दिया जाता है। अन्ततः, ''सीज़र'' रोमी सम्राट का प्रचलित शीर्षक बन गया।[6]

जूलियस सीज़र को अर्द्ध देवता के रूप में जाना जाता था और उसके नाम से मन्दिर थे। वह मुकुट नहीं पहनता था, परन्तु कई लोग इस बात से डरते थे कि एक दिन वह स्वयं को राजा बना देगा। 15 मार्च, 44 ई.पू. को ब्रुटुस, कैसियुस और अन्य षड्यन्त्रकारियों द्वारा उसकी हत्या कर दी गई।

अगस्तुस कैसर (27 ई.पू.-14 ई.)[7]

जूलियस सीज़र ने अपने एक भतीजे ओक्टेवियन को गोद लेकर उसे अपना उत्तराधिकारी बना दिया। जूलियस सीज़र के मरने के बाद, राज्य में गृहयुद्ध छिड़ गया। कई लड़ाइयों के बाद, ओक्टेवियन रोम का पहला सम्राट बना। 27 ई.पू. में, उसने रोम के गणतन्त्रीय प्रबन्ध की बहाली की घोषणा कर दी और सीनेट ने उसे अगस्तुस (''ऊंचा किया हुआ'') की उपाधि दे दी। वास्तव में वह देश का वास्तविक प्रधान बन गया, जिसकी सलाहकार समिति सीनेट थी।

अगस्तुस के शासन ने मसीहियत के लिए मार्ग तैयार किया, जिसमें ''समयों के पूरा होने'' के लिए रोमी सम्राज्य ने अनजाने में योगदान दिया (गलातियों 4:4)। इन तैयारियों में से कुछ *Pax Romana* (रोमी शांति) की स्थापना, यूनानी भाषा के विस्तार (नया नियम *कोयनि*[8] यूनानी में लिखा गया था) और सड़कों के बहुत बड़े जाल बिछने से पूरे साम्राज्य में यातायात और संचार सुविधा उपलब्ध हो गई। यीशु के जन्म के समय राजा अगस्तुस ही था (लूका 2:1)।

तिबिरियुस कैसर (14-37 ई.)

तिबिरियुस अगस्तुस का सौतेला पुत्र और दामाद था। अगस्तुस के मरने के बाद तिबिरियुस सम्राट बना। यीशु की निजी सेवकाई और मृत्यु के समय वह राजा था (लूका

3:1)। कलीसिया की स्थापना के समय भी वह सत्ता में था।

गयुस कलिगुला (37-41 ई.)

तिबिरियुस का पर-भतीजा कलिगुला अगला सम्राट बना। कई साल बाद ग भीर बीमारी के कारण वह मानसिक रूप से विक्षिप्त हो गया। (उसे ''पागल सम्राट'' कहा जाता था।) उसने कुछ धार्मिक सताव, मु यतया यहूदियों के विरुद्ध आर ा किया। जब उसके आस-पास वालों पर अत्याचार होने लगा तो उसके अपने ही अधिकारियों ने उसकी हत्या कर दी। नये नियम में उसका नाम नहीं मिलता।

क्लौदियुस (41-54 ई.)

क्लौदियुस तिबिरियुस का भतीजा और कलिगुला का चाचा था। कलिगुला की हत्या के बाद क्लौदियुस को राजकीय पहरेदारों द्वारा सम्राट घोषित कर दिया गया। क्लौदियुस के शासनकाल में रोम संसार का व्यापारिक केन्द्र बन गया और मिस्र, उत्तरी अफ्रीका, सिसली, स्पेन, कुप्रुस, बर्तानिया, यूनान और बालकन देशों तथा अन्य स्थानों से सामान यहां आता था।

नये नियम में क्लौदियुस का नाम दो बार आता है (प्रेरितों 11:28; 18:2)। यहूदियों को रोम से निकालने के समय (प्रेरितों 18:2) उसने मसीही लोगों को भी उनके साथ निकाला होगा; परन्तु उसने सताव के लिए मसीही लोगों को अलग नहीं किया। उसे अपनी चौथी पत्नी (और भतीजी) द्वारा ज़हर दिया गया, जो चाहती थी कि राजा उसके पुत्र नीरो को बनाया जाए।

नीरो (54-68 ई.)

नीरो कलिगुला का भतीजा और क्लौदियुस का लेपालक पुत्र था। अपने शासन के पहले भाग में, उसे अच्छे लोगों द्वारा सलाह दी गई थी। यही वह कैसर था, जिससे प्रेरितों 25:10-12 में पतरस ने अपील की थी। पहली कैद से छूटने के समय के लगभग, स्वार्थी और मौका परस्त विरोधी नीरो पर हावी हो गए और शीघ्र ही उसके राज्य का पतन हो गया। 64 ईस्वी में जब नीरो पर रोम में लगने वाली आग भड़काने का आरोप लगा तो उसने उलटा मसीही लोगों पर आरोप लगा दिया। इस प्रकार रोमी सरकार द्वारा मसीही लोगों पर स्पष्ट रूप से पहली बार सताव आर भ हुआ।[9]

बहुत से रोमी लोग नीरो पर भरोसा नहीं करते थे। 68 ईस्वी में, स्पेन में रोमी सेनाओं ने विद्रोह करके अपने अगुवे गलबा को सम्राट घोषित कर दिया। नीरो भाग खड़ा हुआ। पकड़े जाने पर उसने आत्महत्या कर ली। इस प्रकार जूलियो क्लौडियन राजवंश का अन्त हो गया। इससे भी अजीब बात, कुछ रोमियों के मन में नीरो का विशेष स्थान अभी भी था। यह दावा करते हुए कि एक दिन नीरो वापस आएगा, ''नीरो वापस आए मिथ्या'' नामक एक दंतकथा बन गई।[10]

''चार सम्राटों का वर्ष'' (68-69 ई.)

नीरो की मृत्यु के बाद उलझन भरा समय था। उसके तुरन्त बाद चार सम्राटों का शासन आ गया, जिन्हें रोमी सेना के एक भाग का समर्थन मिला हुआ था। कई लेखक पहले तीन भागों को केवल ''दावेदार'' या ''ढोंगी'' ही कहते हैं: गलबा (जून 68-जनवरी 69), ओथो (जनवरी-मार्च 69), और विटेलियुस (अप्रैल-दिस बर 69)। (इन लोगों के बाद शेष किसी भी सम्राट का नाम बाइबल में नहीं दिया गया।) चौथा विस्पेसियन था, जिसे 67 ईस्वी में यहूदी विद्रोह को दबाने के लिए नीरो ने पलिश्तीन भेजा था। विस्पेसियन अपने पुत्र टाइटस को रोमी सेना का इंचार्ज बनाकर स्वयं रोम लौट आया था।

लेवियुस विस्पेसियन (69-79 ई.)

69 ईस्वी के दिस बर माह में सीनेट द्वारा विस्पेसियन के सम्राट होने की पुष्टि कर दी गई। गृहयुद्ध के फिर भड़क उठने को रोकने के लिए उसने अपने उत्तराधिकारी के रूप में अपने पुत्र टाइटस को नामजद कर दिया, जिससे लेवियन राजवंश की आधारशिला रखी गई।

टाइटस (79-81 ई.)

70 ईस्वी में यरूशलेम का विनाश करने वाले रोमी के रूप में टाइटस का नाम प्रसिद्ध है। रोम में द आर्क ऑफ़ टाइटस इस घटना को मानता है। टाइटस को रोम के प्रसिद्ध कोलेसियम का निर्माण पूरा करने के लिए भी जाना जाता है, जिसका आर भ उसके पिता ने किया था। उसके शासन काल में एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक विनाश वेसुवियुस पहाड़ का फूटना था, जिससे पोंपेई तथा निकट के अन्य नगर नष्ट हो गए थे। 81 ईस्वी में ज्वर से टाइटस की मृत्यु हो गई।[11]

डोमिशियन (81-96ई.)

इसके बाद टाइटस की जगह उसका छोटा भाई डोमिशियन गद्दी पर बैठा।[12] अपनी अति महत्वाकांक्षा के कारण डोमिशियन को अपने पिता या अपने भाई की सरकार में भी सक्रिय भूमिका नहीं दी गई थी। कई तरह से डोमिशियन एक प्रभावशाली सम्राट था। उसके शासनकाल में रोमी साम्राज्य की सीमाएं बर्तावनी टापुओं से अफ्रीकी मरुस्थल, अटलांटिक महासागर से फरात नदी तक बढ़ गईं।[13]

डोमिशियन ने सम्राट पूजा जैसी कई प्राचीन प्रथाओं को फिर से आर भ किया। कुछ सम्राट पूजा की बात को ग भीरता से नहीं लेते थे, परन्तु डोमिशियन ने इसे ग भीरता से लिया। उसने अपने नाम के साथ ''प्रभु और परमेश्वर'' लगवाकर पूरे साम्राज्य में अपनी मूर्तियां लगवा दीं। उसने सरकारी महकमे बनाए, जिनका काम सम्राट की मूर्ति की पूजा करने के लिए सब को विवश करना था।[14]

साम्राज्य में हर व्यक्ति को वर्ष में एक बार डोमिशियन के न्यायाधीशों के सामने

> *kaisar kurios* अर्थात कैसर प्रभु है, कहने और कैसर के देवता होने के लिए धूप की चुटकी जलाने के लिए पेश होना आवश्यक था। स्वामी भक्ति की इस परीक्षा के बाद, एक साल तक के लिए लिखित प्रमाण पत्र जारी किया जाता था।[15]

डोमिशियन की नज़र में सम्राट की पूजा सिंहासन के प्रति निष्ठा से और साम्राज्य से जुड़ी थी। उसे देवता मानने से इनकार करना राजद्रोह के बराबर था।

मसीही लोगों द्वारा सम्राट की पूजा करने से इनकार करने पर,[16] उसने कलीसिया पर पहला देशव्यापी संगठित सताव आर भ किया। सामान्य दण्ड आम तौर पर यातना, मृत्यु (साधारणतया सिर काटकर), निर्वासन और स पत्ति जब्त करना होता था। इसमें सबसे प्रभावकारी दण्ड अधिकार प्राप्त नागरिक के रूप में मान्यता देना बन्द करना होता था।

अपने शासन के अन्त के निकट डोमिशियन वहमी हो गया। उसके आस-पास का कोई भी व्यक्ति सुरक्षित नहीं था। उसकी पत्नी और अंगरक्षकों ने षड्यन्त्र रचा और सित बर 96 ईस्वी में उसे एक हत्यारे द्वारा छुरा घोंपकर मरवा दिया। सीनेट द्वारा उसके स्मरण को श्राप दिया गया और उसका नाम सार्वजनिक स्मारकों से मिटा दिया गया। इस प्रकार लेवियन राजवंश का अन्त हो गया।

बाद का इतिहास-और साम्राज्य का पतन

डोमिशियन के बाद नरवा, ट्राजन, हद्रियन, एंटोनियुस, प्युस और मरकुस अरेलियुस नामक ''पांच अच्छे सम्राट'' आए। उनके शासनकाल के दौरान साम्राज्य में समृद्धि चरम पर पहुंच गई, परन्तु उनके शासन को रोम के ''अंत का आर भ'' भी कहा जाता है:

> हद्रियन के शासन में सेना के पीछे हटने की नीति आर भ हुई; तब से चंचल जंगलियों के विरुद्ध रोम कभी आक्रामक नहीं, बल्कि रक्षात्मक ही रहा। एंटोनियुस प्युस और मरकुस अरेतिलयुस के काल में निर्बलता और गिरावट के चिह्न दिखाई देने लगे थे। यह रोम की शाही सरकार के सबसे सुखद काल के अन्त की शुरुआत थी।[17]

मरकुस अरेलियुस के शासन से *पैक्स रोमाना* का अंत हो गया और उसके बाद एक सौ वर्ष तक युद्ध की स्थिति रही। सेना अपनी इच्छा से सम्राट नियुक्त करती और उन्हें उतार देती। 313 में कॉन्सटेंटाइन ने एडिक्ट ऑफ़ मिलान नामक आदेश जारी किया, जिससे मसीहियत को एक वैध धर्म माना गया। कॉन्सटेंटाइन की मृत्यु के बाद अव्यवस्था का एक और दौर आर भ हुआ। अन्त में रोम और पश्चिमी साम्राज्य 576 में खत्म हो गया, यद्यपि पूर्वी साम्राज्य अर्थात बाइज़नटाइन साम्राज्य अगले एक हज़ार वर्षों तक बना रहा।

रोमी साम्राज्य को ''सबसे बड़ी राजनैतिक प्राप्ति पाने वाला'' कहा गया है: ''जूलियस

और उसके उत्तराधिकारी अगस्तुस द्वारा तैयार किए गए टिकाऊ ढांचे की तुलना में सिकन्दर महान, चार्लमैगनी और नैपोलियन की विजयें तुच्छ लगती हैं।''[18] कौन जाने यदि रोमी साम्राज्य परमेश्वर को अपना विरोधी बनाने का निर्णय न लेता तो यह और कितनी देर तक रह सकता था?[19]

रोम ने मसीही लोगों को क्यों सताया

गैर रोमी धर्मों को अनुमति प्राप्त या अनुमति रहित धर्म माना जाता था। अनुमति रहित धर्मों के लोगों को कानून द्वारा दण्ड दिया जा सकता था, परन्तु राज्य की शांति या समाज की नीतियों में गड़बड़ न करने तक रोमी सरकार आमतौर पर इन धर्मों को सह लेती थी। तौ भी अनुमति रहित धर्मों के बारे में नियम आवश्यकता पड़ने पर कानून की किताब में ही थे। (राज धर्म में से मूल नैतिक बातें निकल चुकी थीं और सरकारी धर्म केवल राज्य की भलाई का राजनैतिक और सैनिक रूप रह गया था, न कि किसी के उद्धार का। कई रोमियों ने कई धर्मों को अपना लिया था।)

मसीहियत अनुमति रहित धर्म था। इसे आर भ के इसके इतिहास में यहूदी मत का अंकुर माना जाने के कारण, जो एक अनुमति प्राप्त धर्म था, इतना महत्व नहीं मिला, परन्तु नीरो के समय से मसीहियत पर संदेह किया जाने लगा था।

रोम और मसीहियत में कई कारणों से स्पष्ट विरोध था। पहला तो यह कि दोनों ही विश्वव्यापी साम्राज्य थे। दूसरा, वे एक-दूसरे के कुछ ही वर्षों के भीतर अस्तित्व में आए थे। तीसरा, दोनों ही सब लोगों से स पूर्ण निष्ठा की मांग करते थे। यीशु ने कहा था कि वह ''मिलाप कराने नहीं, पर तलवार चलाने आया'' था (मत्ती 10:34)। मसीहियत की सच्चाई स्पष्टतया बुराई के साथ झगड़ा थी। शैतान से हम मसीह के साथ लड़ने के लिए हर साधन का इस्तेमाल करने की उ मीद करेंगे और पहली शताब्दी में रोमी साम्राज्य से शक्तिशाली हथियार और कौन हो सकता था?

उपलब्ध सभी अनुमति रहित धर्मों में से मसीहियत को दण्ड देने के लिए अलग किया गया। कुछ स भावित कारण ये हैं कि ऐसा क्यों हुआ:

(1) मसीहियत ''राज्य'' के बारे में बहुत बताती है और अधिकतर लोगों को आत्मिक राज्य और सांसारिक राज्य में अन्तर की समझ तक नहीं थी।

(2) मसीही लोगों के संसार के अन्त के विचार क्रांतिकारी लगते थे। मसीही प्रचारक सब वस्तुओं के विनाश की बात करते थे।

(3) इतने सारे संलग्नों से मसीहियत का अचानक प्रकट होना सरकार के अगुओं को परेशान करने वाला था।

(4) मसीहियत असहनशील थी। अधिकतर धर्मों के विपरीत कोई व्यक्ति मसीही होने के साथ-साथ कुछ और नहीं हो सकता था। मसीही बनने का अर्थ है कि व्यक्ति ने वह सब त्याग दिया है, जिसे पहले वह पवित्र मानता था।

(5) मसीहियत निराली थी। मसीही लोग आमतौर पर रात के समय इकट्ठे होते थे।

जिसे कुछ लोग ''गुप्त सभाएं'' मानते थे। मसीही शिक्षाएं और व्यवहार घुमाए गए (कई बार जान-बूझकर) थे और उनकी व्या या अधर्म और व्यभिचार के रूप में की जाती थी। मसीही लोगों पर शराबी, झगड़ालू, निकट स बन्धियों के साथ शारीरिक स बन्ध बनाने वाले, बच्चों की हत्या करने वाले और आदमखोर होने के झूठे आरोप लगाए जाते थे।

(6) सरकार के दृष्टिकोण से मसीही लोग हठी थे। रोमी मसीही लोगों से वेदी पर केवल चुटकी भर धूप डलवाना चाहते थे। उनके दृष्टिकोण से यह बहुत अधिक नहीं था।

(7) मसीही लोगों को नास्तिक माना जाता था, क्योंकि उनका कहना था कि अन्य विश्वासों के देवता वास्तव में ईश्वर हैं ही नहीं।

समय बीतने के साथ मसीही लोगों पर हर विपत्ति का दोष मढ़ा जाने लगा। मसीही अपोलोजिस्टों (पैरवी करने वाले) ने ध्यान दिलाया कि मसीहियत की स्थापना से पहले भी विनाश हुए थे। सबसे बड़ी बात कि विनाश आने पर मसीही लोग ही सबसे अधिक बलिदानपूर्वक कार्य करके लोगों की सहायता करते थे। ऐसी बातों पर ध्यान दिलाने से समस्या हल नहीं हुई, क्योंकि पूर्वधारणा किसी दलील को नहीं सुनती।[20]

रोम का प्रतिद्वंद्वी: पारथ

प्रेरितों 2 अध्याय में पिन्तेकुस्त के दिन उपस्थित देशों का नाम लिखते हुए लूका ने पारथ का नाम भी दिया (आयत 9)। आज के उत्तरी ईरान और दक्षिणी तुर्कमेनिस्तान वाली जगह कैस्पियन सागर के उत्तर पूर्व में, लगभग 300 मील (480 किलोमीटर) ल बा और 120 मील (192 किलोमीटर) चौड़ा एक छोटा-सा देश था। यह उपजाऊ परन्तु पहाड़ी क्षेत्र था।

प्रकाशितवाक्य के लिखे जाने के समय पारथ का शासन प्राचीन फारसी साम्राज्य के अधिकतर भाग पर कब्जा करके पश्चिम में फरात नदी से लेकर पूर्व में अफगानिस्तान तक था। रोमी साम्राज्य की सीमाओं पर यही एकमात्र महत्वपूर्ण सैनिक शक्ति थी और सदियों से यह रोमियों की पसली का कांटा थी।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के कुछ रूपकों को पार्थियों से जोड़ा जा सकता है। 6:2 वाला धनुष और मुकुट वाला स्वार्थ फारस/पारथ के सिक्कों का स्मरण कराता है, जो अपने हाथ में धनुष और सिर पर मुकुट वाले घुड़सवार को दर्शाता है। ''पारथी योद्धा कुशल घुड़सवार और तीरअंदाज़ थे और उनकी अभिव्यक्ति 'पारथी निशाना' का अर्थ अन्तिम बात होना था।''[21]

पारथ के लिए शायद सबसे स्पष्ट संकेत अध्याय 9 और 16 में मिलते हैं: अध्याय 9 ''बड़ी नदी फरात'' की बात करता है, जहां चार स्वर्गदूतों को मनुष्यजाति को दण्ड देने के लिए छोड़ा गया; स्वर्गदूतों को बाद में ''घुड़सवारों की सेनाओं'' के रूप में पहचाना गया (आयतें 14-16)। अध्याय 16 में फिर से ''पूर्व दिशा के राजाओं'' के साथ ''महानदी फरात'' का उल्लेख है (आयत 12)। संकेत यह था कि इन राजाओं को अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए परमेश्वर द्वारा इस्तेमाल किया जाना था।

रोमी इतिहास की एक घटना में दिखाया गया है कि रोमी साम्राज्य के लिए पारथ और फरात नदी का क्या महत्व था। जूलियस सीज़र और पौंपे महान के साथ, ''मरकुस'' लिसिनियुस क्रेसुस ने ''पहला त्रिशासकत्व'' बनाया था। प्रसिद्धि और समृद्धि में कैसर का मुकाबला करने को दृढ़ संकल्प क्रेसुस ने पारथ को गुलाम बनाने का निर्णय लिया। 53 ई. पू. में वह फरात के आगे बढ़ा। कढाहए नामक स्थान में युद्ध के दौरान 20,000 रोमी मारे गए, 10,000 बंदी बना लिए गए, रोमी झण्डा खो गया और क्रेसुस स्वयं मारा गया। फिर पार्थियों ने फरात को पार करके उत्तरी सीरिया में लूटपाट की थी। ''महानदी फरात'' के पार आक्रमण आर भ करने के ''पूर्वी दिशा के राजाओं'' के सुझाव से भी रोमी सेनापति की कमर टूट गई।

''धनुष और मुकुट वाला घुड़सवार'' (6:2)

224 ईस्वी में ससेनियों द्वारा पारथी राजवंश पर विजय पाई गई, इस कारण पारथी रोमी साम्राज्य की अन्तिम पराजय के लिए मु य रूप से ज़ि मेदार नहीं थे। इसलिए प्रकाशितावक्य में पार्थियों को मूल अर्थ में नहीं लिया जाना चाहिए, बल्कि यह रोमी साम्राज्य को नष्ट करने के परमेश्वर के बलों का शायद सैनिक बलों का संकेत है। भीतर से ही आक्रमण शाही रोम के पतन का महत्वपूर्ण कारक था।

रोम का पतन क्यों हुआ

रेअ समर्स ने रोम के पतन के तीन महत्वपूर्ण कारण बताए हैं: ''... यह माना हुआ तथ्य है कि शाही रोम तीन बातों अर्थात प्राकृतिक आपदा, भीतरी पतन और बाहरी आक्रमण के मेल से गिरा।''[22]

द डिक्लाइन एण्ड फाल ऑफ़ द रोमन ए पायर के लेखक एडवर्ड गिब्बन ने यह मानते हुए कि भीतरी पतन निर्णायक कारण था, रोम के पतन के पांच कारण बताए:

- तलाक का इतनी तेज़ी से बढ़ना; घर की प्रतिष्ठा और पवित्रता को जो कि मानवीय समाज का आधार है, कम करना।
- नि न वर्ग के लोगों के लिए नि:शुल्क रोटी और रंगभूमियों के लिए ऊंचे से ऊंचे सरकारी पैसे का खर्च किया जाना।
- भोग-विलास के लिए पागलपन; खेलें प्रतिवर्ष और उत्तेजनापूर्ण और बर्बर होती जा रही थीं।
- विशालकाय हथियारबंद सेनाएं बनाना जब कि वास्तविक शत्रु भीतर ही था: लोगों का पतन।

- धर्म का पतन-विश्वास केवल दिखावे में बदल रहा था, जिसका जीवन के साथ कोई स्पर्श नहीं था और लोगों को चौकस करने और मार्ग दिखाने में पंगु बन रहा था।[23]

गिब्बन के पांच कारणों को समर्स द्वारा दिए गए दूसरे नाम के नीचे उपभाग माना जा सकता है।

प्रकाशितवाक्य का अध्ययन करते हुए इन बातों को ध्यान में रखें। समय-समय पर हमें संकेतवाद मिलेगा।

प्रकाशितवाक्य के लिए संकेत विलक्षण

प्रकाशितवाक्य पुस्तक के कुछ संकेत विलक्षण हैं। वे पुराने नियम, अन्य अपोकलिप्टिक साहित्य या समय के ऐतिहासिक लेखों में नहीं मिलते। इसके उदाहरणों में पिछले पाठ के आर भ में दिया गया भयानक लाल अजगर और अजगर के सामने खड़ी स्त्री हैं (अध्याय 12)। इन विलक्षण संकेतों की सूची दिए बिना हम वचन में इन तक आने पर प्रत्येक पर विचार करेंगे। इनमें से कुछ संकेतों की व्या या वचन से की गई है (देखें 12:9)। शेष की व्या या हमें उसके संदर्भ तथा प्रकाशितवाक्य के स पूर्ण संदेश को ध्यान में रखकर करनी चाहिए।

सारांश

इससे प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में संकेतों की चार मूल किस्मों का हमारा अध्ययन पूरा हो जाता है: (1) सं याओं का इस्तेमाल संकेतों में किया गया, (2) संकेत पुराने नियम से लिए गए, (3) ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित संकेत और (4) प्रकाशितवाक्य के लिए विलक्षण संकेत।

मैंने पहले कहा था कि संकेतों की अन्य किस्में पुस्तक में मिलती हैं। उदाहरण के लिए रंगों का इस्तेमाल संकेतों में किया गया है:

> अपोकलिप्टिक साहित्य में सफेद रंग सबसे अधिक मिलता है और यह विजय का संकेत है। ... लाल कई बार मिलता है, जो युद्ध या झगड़े का संकेत है। काला किसी चीज़ की कमी अर्थात अकाल में भोजन की कमी या महामारी में स्वास्थ्य की कमी को दर्शाता है।[24]

प्रकाशितवाक्य में हमें *नये* नियम के कुछ संकेत ही मिलेंगे। प्रकाशितवाक्य लिखे जाने के समय नये नियम की कुछ पुस्तकें कई दशकों से विस्तृत की जा रही थीं। यीशु के ''निष्कलंक मेमना'' (1 पतरस 1:19) और कलीसिया के अब्राहम की आत्मिक संतान (गलातियों 3:7) होने की बातों को अधिकतर मसीही जानते थे।[25] वचन में रूपकों की अन्य किस्में आने पर हम उन पर विचार कर सकते हैं। अभी के लिए संकेतों की चार मु य किस्मों से परिचित होना ही आपके लिए काफ़ी है।

एक बार फिर मैं आपसे इस पाठ में दी गई कई बातों से अभिभूत न होने का आग्रह करता हूं! अगले प्रश्नों को पढ़कर आप पाठ में से देखकर उत्तरों को रेखांकित कर लें। इससे कई महत्वपूर्ण बातें उघड़ जाएंगी, जो आपके लिए याद रखनी आवश्यक हैं।

आप अभी भी मेरे साथ हैं? आप अभी भी प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का अध्ययन करने और इसे समझने को समर्पित हैं? यदि हां तो निराश न हों। अपना सिर पकड़ लें; आप सही हैं! हम परिचय का केवल एक और पाठ देखेंगे और फिर प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में चले जाएंगे!

टिप्पणियां

[1]''सिगनीफाइड'' अनुवाद हुए यूनानी शब्द का मूल अनुवाद है। NASB में ''सिगनीफाइड'' की जगह ''communicated'' है, परन्तु इसके मार्जिनल नोट में ''Or, *signified*'' है। [2]*बैग्स्टर'स अनैलिटिकल ग्रीक लैक्सिकन* (1971), S.V. ''सिगनीफाई।'' [3]डब्ल्यू. ई. वाइन, *द एक्सपैंडेड वाइन'स एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स,* सं. जॉन आर. कोहिलेनबर्गर III विद जे स ए. स्वेंसन (मिनियापुलिस, मिनेसोटा: बैथनी हाउस पब्लिशर्स, 1984), 1043. [4]प्रकाशितवाक्य में पुराने नियम के सैकड़ों हवाले हैं, परन्तु कोई प्रत्यक्ष उदाहरण नहीं है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के पुराने नियम के मूल के अतिरिक्त अध्ययन का अच्छा स्रोत फैरल जैंकिन्स, *द ओल्ड टैस्टामेंट इन द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (मेरियन, इंडियाना: कोगडिल फाउंडेशन पब्लिकेशंस, 1972)। [5]इस पर कुछ संदेह है कि जूलियस ''पहला सम्राट'' था या नहीं। रेअ समर्स का कहना है, ''आमतौर पर यही समझा जाता है कि जूलियस कैसर ही पहला रोमी सम्राट था; कठोर वैधानिक नियम में सरकार के स्थापित रूप में साम्राज्य चलाने वाला अगस्तुस था'' (*वरदी इज द लै ब* [नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1951], 81)। हैनरी स्वेट ने कहा है कि जूलियस कैसर ने ''प्रेनोमेन इ पैरेटोरिस' का दावा'' तो किया परन्तु वह ''बाद के अर्थ में शासक के बजाय तानाशाह अधिक था'' (*द अपोकलिप्ट ऑफ़ सेंट जॉन* [कैंब्रिज: मैकमिलन कं., 1908; रीप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं], 220)। [6]सांसारिक लेखक कई बार ''कैसर'' को कम करके बताते हैं, किन्तु बाइबल उसे केवल सम्राट कहती है। [7]कुछ लोग ओक्टेवियन के शासन का आर भ 31 ई.पू. बताते हैं। [8]*Koine* का अर्थ ''साधारण'' है। *कोयनि* यूनानी आम लोगों की भाषा थी। [9]यह सताव देशव्यापी नहीं था, परन्तु यह बाद के होने वाले सताव का पूर्ववर्ती अवश्य था। [10]हम इस मिथ्या का उल्लेख प्रकाशितवाक्य 13 के अपने अध्ययन के स बन्ध में संक्षेप में करेंगे।

[11]कुछ लोग संदेह करते हैं कि उसे उसके भाई डोमिशियन द्वारा विष दिया गया था। [12]डोमिशियन के शासन की एक समीक्षा विलियम बार्कले, *द रैवलेशन ऑफ़ जॉन,* अंक 2, संशो. संस्क., द डेली बाइबल स्टडी सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1976), 139-41 में दी गई है। [13]इस पुस्तक में दिया गया रोमी सम्राज्य का मानचित्र देखें। [14]प्रत्येक नगर में पूजा करवाने का जि मा *प्रेफेक्टस उरबी* नामक एक सरकारी संस्था का था। प्रत्येक नगर से डिप्टी लेकर एक शक्तिशाली *कौंसिलिया* बनाया गया था जिस पर राजा की मूर्तियां बनाने और उसकी पूजा की वेदियां बनाने और हर प्रकार से राजधर्म को बढ़ावा देने की ज़ि मेदारी थी। [15]ह्यूगो मेकोर्ड, *द रॉयल रूट ऑफ़ रैवलेशन* (नैशविल्ले: टवंटिथ सैंचुरी क्रिश्चियन, 1976), 13. वेदी पर धूप की चुटकी रखने का काम यह पता लगाने की परीक्षा थी कि कोई व्यक्ति मसीही है या नहीं (विश्वासी मसीही ऐसा नहीं करते थे)। डोमिशियन को इसे एक परख के रूप में निकालने वाला माना जाता है। [16]यह समझने के लिए कि उन्होंने क्यों नहीं करनी थी, देखें 1 कुरिन्थियों 8:5, 6; इफिसियों

5:4, 5; प्रेरितों 4:12. मण्डलियां आग में धूप की चुटकी रखने वाले मसीही लोगों से संगति तोड़ लेती थीं। [17]एस. एंगस, ''रोमन ए पायर,'' *द इंटरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया,* सामा. संस्क. जे स ऑर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1960), 4:2598-99. [18]वही, 4:2598. [19]पुस्तक को पढ़ते समय इस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखें। यदि आप ऐतिहासिक संकेतवाद के कुछ उदाहरणों से आगे सोचना चाहते हैं, तो डोमिशियन की तुलना 13:1-10 वाले समुद्र से निकलने वाले पशु से करें (14, 15 आयतें भी देखें)। क्लौदियुस के शासन में होने वाली व्यापारिक सफलता की तुलना 18:11-13 वाली सूची से करें। 17:10, 11 के रहस्यमयी वाक्यों के साथ सम्राटों की पूरी सूची रखें। [20]इसकी अधिकतर सामग्री एस. एंग्स, ''रोमन ए पायर,'' *द इंटरनेशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया,* सामा. संस्क. जे स ऑर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1960), 4:2598-611 से ली गई थी। इस विषय पर अतिरिक्त अध्ययन के लिए, देखें रेअ समर्स, *वरदी इज़ द लै ब* (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1951), 87-88.

[21]रिचर्ड एन. फ्राय का *ग्रोलियर मल्टीमीडिया इन्साइक्लोपीडिया* (1995), s.v. ''पार्थिया।'' [22]रेअ समर्स, *वरदी इज़ द लै ब* (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1951), 43. [23]पॉल ली टैम, *इन्साइक्लोपीडिया ऑफ़ 7,700 इलस्ट्रेशन्स: साइज़ ऑफ़ द टाइ ज़* (रॉकविल्ले, मैरीलैंड: अश्योरेंस पब्लिशर्स, 1979), 250 में उद्धृत। [24]जे स एम. ऐफर्ड, *रैवलेशन फॉर टुडे* (नैशविल्ले: अबिंग्डन प्रैस, 1989), 25. [25]विलियम हैंड्रिक्सन ने *मोर दैन कंकरर्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1954), 61 में प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में दिखाए गए नये नियम के कुछ पदों की सूची दी है।

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. संकेतों की चार मु य किस्में कौन सी हैं?
2. पाठ में सुझाव मिलता है कि पुराने नियम के हवाले की तुलना प्रकाशितवाक्य में उससे मिलते हवाले से करने पर, आपको ''घुमाव'' को देखना आवश्यक है। ''घुमाव'' से लेखक का क्या अर्थ है और यह क्या संकेत देता है?
3. रोमी साम्राज्य की स्थापना किसने की?
4. पहला रोमी सम्राट कौन था?
5. पौलुस ने किस कैसर से अपील की?
6. किस कैसर ने मसीही लोगों का पहला सताव आर ा किया?
7. नीरो की मृत्यु के बाद क्या दंत कथा बन गई?
8. किस सम्राट ने यरूशलेम को नष्ट किया (सम्राट बनने से पहले)?
9. टाइटस के शासनकाल में कौन सी प्राकृतिक विपत्ति आई?
10. किस कैसर ने मसीही लोगों का पहला संगठित साम्राज्यव्यापी सताव आर भ किया?
11. यह जानने के लिए कि कोई व्यक्ति मसीही है या नहीं, कौन सी आसान परीक्षा (डोमिशियन द्वारा मानी गई) थी। (इस प्रश्न के उत्तर के लिए टिप्पणियों में देखें।)
12. पाठ में पांच ढंग बताए गए हैं जिनसे मसीही लोगों को दण्ड दिया गया था। उनके नाम बताएं।

100 ईस्वी के आस-पास रोमी साम्राज्य